



तत् त्वं पूषन् अपावृणु  
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय , खेतड़ी नगर  
KENDRIYA VIDYALAYA , KHETRI NAGAR  
Khetri Nagar, Jhunjhunu , Rajasthan Pin:333504  
<https://khetrinagar.kvs.ac.in/>,  
kvktrnagar@rediffmail.com Tel./Fax : 01593-  
220032

Read  
the  
BOOKS



बेटी बचाओ



बेटी पढ़ाओ



स्वच्छ  
भारत

विद्यालय पत्रिका  
SCHOOL MAGZINE

सत्र: 2019-20



# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## के.वी.एस अधिकारियों का दौरा





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## Fire Safety Mock Drill (अग्नि सुरक्षा मॉक ड्रिल)



## स्काउट एंव गाइड





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## प्राथमिक छात्र गतिविधियाँ

Classroom Teaching/ Learning



Community Lunch



Fancy dress competition



Mono Acting



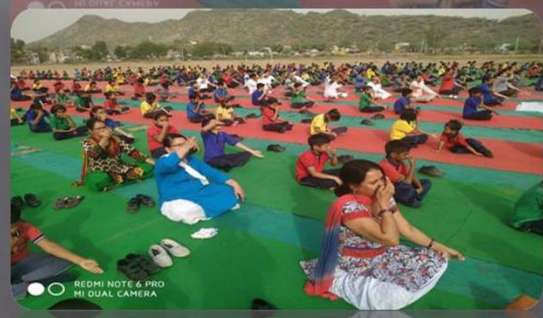
मटकी निर्माण प्रतियोगिता





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2019



## संस्कृत सप्ताह समारोह 2019





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## प्लागिंग दौड़ गाँधी जी के जन्म दिवस पर



## गाँधी जी जयंती उत्सव





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## स्वच्छता पखवाड़ा





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## हिंदी पखवाड़ा





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## स्वच्छता अभियान- 2019



## ARTS AND CULTURE (कला और संस्कृति)





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## Sports day( खेल दिवस)- 2019





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## खेल दिवस पुरस्कार वितरण



## विद्यार्थी पुलिस कैडेट 2019





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## जिज्ञासा कार्यक्रम

Visit to Science Exhibition at CEERI, PILANI ON 20.08.19



50 Students along with 5 teachers Visited the Exhibition

## TREE PLANTATION (वृक्षारोपण)





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## प्राथमिक शिक्षक कार्यशाला



## CHILDREN'S DAY 2019 (बाल दिवस)





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## विवेकानंद राष्ट्रीय संग्रहालय-2019



## चिकित्सा परीक्षण-2019





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## NATIONAL UNITY DAY राष्ट्रीय एकता दिवस 2019



## संविधान दिवस और नागरिकों के कर्तव्यों पर अभियान





# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## जागृत नागरिक सप्ताह



## प्रभातफेरी





# छात्रों द्वारा चित्रकारी



TEJASVI VIIIIB



DIVYA IXB



SIMRAN VIB



YASHWARDAN XB



YASHASVI YADAV VIB



BHARTEE VIIIIB



# छात्रों द्वारा चित्रकारी



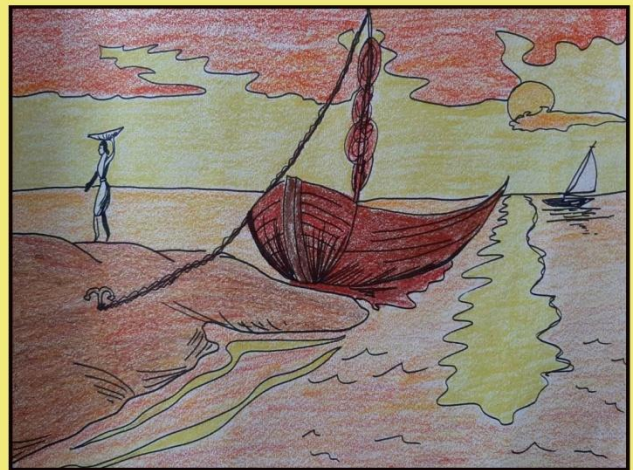
VAISHNAVI NAIR XIA



DIVYA IXB



HANSIKA SONI VIA



VAISHNAVI NAIR XIA



YASHWARDAN XB



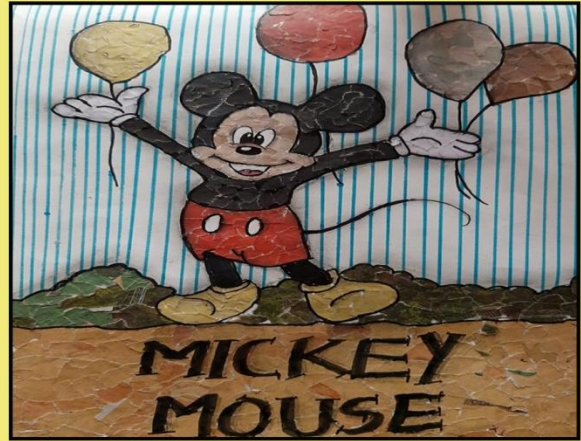
ANSHUL JANGIR VIB



# छात्रों द्वारा चित्रकारी



PAYAL YADAV VIA



BHARTEE VIIA



GHETALI SHARMA VIIA



CHANCHAL VIIIB



NITESH KUMAR IIIB



REHAN KHAN VIIIB



# विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

## शिक्षक दिवस-2019



## शिक्षकों को पुरस्कार





## अध्यापन में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार

CERTIFICATE OF EXCELLENCE BY  
KENDRIYA VIDALAYA SANGATHAN TO THE  
TEACHERS

NAME	POST	YEAR
GHANSHYAM KULDEEP	PGT-BIO	2017-18
SURESH KUMAR MEENA	PGT-CHEM	2017-18
NEELAM BAI	PGT-HINDI	2017-18
VINOD KUMAR MEENA	PGT-CHEMISTRY	2017-18
SURENDRA KUMAR MEENA	TGT-SST	2017-18
NARESH KUMAR	TGT-HINDI	2017-18

CERTIFICATE OF EXCELLENCE BY  
KENDRIYA VIDALAYA SANGATHAN TO THE  
TEACHERS

NAME	POST	YEAR
SURENDRA KUMAR MEHRA	PGT-CS	2018-19
RAVI KUMAR	PGT-MATHS	2018-19
NEELAM BAI	PGT-HINDI	2018-19
INDR KUMAR	TGT-MATHS	2018-19
SURENDRA KUMAR MEENA	TGT-SST	2018-19
ROSHAN LAL GURJAR	TGT-SST	2018-19



## खेल और क्रीड़ा में छात्रों की उपलब्धि

# SPORTS ACHIVEMENTS

KV KHETRI NAGAR IN THE UNDER 14 KVS NATIONAL SPORTS MEET 2019

S.NO.	NAME	CLASS	GAME/ EVENT	POSITION
1	KESHAV SAINI	IX B	VOLLEY BALL	U-14
2	MOHIT BARGARH	VIII B	VOLLEY BALL	U-14
3	HIMANSHU KUMAR	VIII B	VOLLEY BALL	U-14
4	YOGESH	VIII A	VOLLEY BALL	U-14
5	MUKUL SAINI	VIII B	VOLLEY BALL	U-14
6	SAHIL SHARMA	IX B	VOLLEY BALL	U-14
7	SHIVAM	VII B	VOLLEY BALL	U-14
8	ARYAN	VIII B	VOLLEY BALL	U-14
9	BHAVYA KUMAR	VIII A	VOLLEY BALL	U-14
10	ROHIT SHERAWAT	VI A	VOLLEY BALL	U-14

## SPORTS AND GAMES

ACHIEVEMENTS OF THE  
STUDENTS IN THE SAI ACADMEY



NAME OF STUDENT/ TEAM	CLASS/SEC	EVENT / GAME	INSTITUTE
MOHIT BARGARH	VIII B	VOLLEY BALL	SAI ACADEMY
HIMANSHU KUMAR	VIII B	VOLLEY BALL	SAI ACADEMY
YOGESH	VIII A	VOLLEY BALL	SAI ACADEMY
MUKUL SAINI	VIII B	VOLLEY BALL	SAI ACADEMY
SHIVAM	VII B	VOLLEY BALL	SAI ACADEMY



छात्रों की अध्ययन में उपलब्धियां

*TOPPERS  
OF CLASS X AND XII*

1. ADITYA SINGH(XII) - 91.00
2. AMISHA PRASAD(XII) - 81.80
3. ROHIT SAINI(XII)- 81.40
1. SNEHA (X)- 91.6
2. REENA (X)-91.2
3. HRITIKA(X)-90.4

*ACHIEVEMENT OF STUDENTS*

*INIIT(MAINS) AND NEET IN FIRST ATTEMPT (OUT OF 14 STUDENTS) IN CLASS XII*

1. ADITYA SINGH(XII) - 538 OUT OF 720
2. ANSHUL MEENA (XII) - CLEARED IIT MAINS
3. KUSHGRA (XII)- CLEARED IIT MAINS



कार्यालय उपखण्ड अधिकारी, खेतड़ी जिला झुन्झुनूं (राज.)

## संदेश

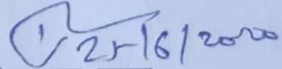
### (नामित अध्यक्ष विद्यालय प्रबंध समिति)

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय, खेतड़ी नगर अपनी ई-पत्रिका 2019-20 का प्रकाशन करने जा रहा है। छात्रों की मौलिक अभिव्यक्ति के लिए पत्रिका का प्रकाशन किया जाना महत्वपूर्ण है।

विद्यालय पत्रिका के माध्यम से छात्रों की सृजनात्मक क्षमता एवं रचनाधर्मिता प्रतिबिंबित होती है। विद्यालय पत्रिका छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु मौलिक चिंतन एवं रचनात्मक लेखन का मूल आधार है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में छात्रों हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जाएगा, जिससे छात्र लाभान्वित होंगे। मैं विद्यालय परिवार की सतत प्रगति की कामना करते हुए, पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी कोटिश: मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

आशा करता हूँ कि आपके इस प्रयास से छात्र-छात्राओं के आलावा समाज भी लाभान्वित होगा।

  
शिवपाल जाट

उपखण्ड अधिकारी, खेतड़ी  
नामित अध्यक्ष  
(विद्यालय प्रबंध समिति)





## प्राचार्य संदेश

Dr. Abdul Kalam Says," Learning gives Creativity, Creativity leads to Thinking , Thinking Provides knowledge, Knowledge makes you great."

उपर्युक्त कथन किसी भी विद्यार्थी के जीवन में कक्षा -कक्ष शिक्षण में सत्य साबित होता है। विद्यार्थी जीवन में सृजनात्मकता व नव प्रवर्तनकारी गुणों का विकास करने का विद्यालय पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। विद्यालय में कक्षा कक्ष के अंदर व बाहर करायी जाने वाली गतिविधियाँ विद्यार्थी को सम्पूर्ण मानव बनने में सहयोग प्रदान करती हैं। विद्यालय पत्रिका भी उसी प्रकार का एक अवसर है जिससे विद्यार्थी अपने में निहित सृजनात्मकता को मूर्तरूप प्रदान करता है। अपनी मौलिक रचना को पत्रिका में देखकर उसे प्रेरणा प्रदान होती है, जो उसे भविष्य में एक अच्छा लेखक, कवि व साहित्यकार के रूप में तैयार होने में उपयोगी होती है।

सत्र 2020 के लिए तैयार की गयी विद्यालय ई- पत्रिका भी ऐसा ही एक प्रयास है। मैं पत्रिका प्रकाशन मंडल के सदस्यों व विद्यार्थियों के प्रयास को जिसके कारण यह ई-पत्रिका आप लोगों (पाठकों) के लिए प्रकाशित हो सकी,के लिए धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

पाठकों से निवेदन है कि विद्यार्थियों के प्रयास में गलतियाँ हो सकती है, उसे अन्यथा न ले बल्कि सुधार हेतु सुझाव देकर अनुग्रहित करे ताकि हम आगामी अकों में सुधार कर सकें।

प्राचार्य  
श्री प्रहलाद सिंह





### संपादक की कलम से.

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है, ' शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास' और सर्वांगीण का अर्थ है - मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक एवं रचनात्मक कौशल का विकास । विद्यालय पत्रिका इन उद्देश्यों की पूर्ति के साधनों का प्रमुख अंग है। विद्यालय पत्रिका जहाँ एक ओर बालपन की कोमल भावनाओं के फूटते अंकुर का पोषण करती है, वहीं बालपन का पल-पल विकास होते देखकर परम संतोष का अनुभव होता है; ठीक वैसे ही जैसे खिलते हुए फूलों को देखकर उस माली को होता है जो उन्हें सींचता है ।

अपने शब्दों और भावनाओं को छपा देखकर किसका मन रोमांच से नहीं भरता ? उनकी कल्पनाओं को मूर्त रूप देने में विद्यालय पत्रिका साँचे की भाँति कार्य करती है।

छात्रों के विचारों और प्रयासों का मूर्त स्वरूप तथा विद्यालय का दर्पण यह विद्यालय पत्रिका आपकी शुभकामनाओं एवं प्रोत्साहन की अपेक्षा के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। आपके सुझाव सदैव हमारा मार्गदर्शन करेंगे । पत्रिका के प्रकाशन का श्रेय हमारे विद्यालय के विद्वान ,कर्मठ, कुशल प्रकाशक एवं समर्पित प्राचार्य श्री प्रहलाद सिंह को है, जो सभी के प्रेरणा श्रोत एवं सशक्त आधार है । संपादक मंडल कृतज्ञता ज्ञापित करता है अपने सभी प्रबुद्ध शिक्षक सहयोगियों के प्रति, जिन्होंने पत्रिका के संपादन-प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से येन-केन प्रकारेण सक्रिय सहयोग प्रदान किया ।

आशा है, आप सभी त्रुटियों को क्षमा करते हुए सहानुभूतिपूर्वक इस लघू-प्रयास को सहर्ष स्वीकार कर एवं प्रोत्साहन प्रदान कर अनुगृहित करेंगे।

विद्यालय के भावी स्वर्णिम इतिहास में आप सभी के शुभआशीर्वादों के समन्वित सक्रिय सहयोग से 'विद्यालय पत्रिका' रूपी पुष्प अपनी मौलिक उपादेयता के आधार पर पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होकर साहित्य जगत को सुवासित कर सकेगा, ऐसी मेरी मंगलमय कामना है।

(श्रीमती नीलम बाई)

स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)





### मुख्य संरक्षक

श्री संतोष कुमार मल्ल, भा,प्र.से.  
आयुक्त,  
के.वि.सं मुख्यालय, नई दिल्ली

### संरक्षक

श्री यशपाल सिंह  
उपायुक्त,  
के.वी.सं, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर

### सहायक संरक्षक

श्री डी.आर. मीना  
सहायक आयुक्त,

श्री मुकेश कुमार  
सहायक आयुक्त,

श्री प्रहलाद सिंह  
प्राचार्य

### मुख्य संपादक

श्रीमती नीलम बाई  
स्नातकोतर शिक्षिका (हिन्दी)

### संपादक मंडल

श्रीमती अंजू (पी.जी.टी अंग्रेजी)  
श्री सुनील कुमार (टी.जी.टी अंग्रेजी)  
श्री नरेश कुमार (टी.जी.टी हिन्दी)  
श्री राजेंद्र प्रसाद वर्मा (टी.जी.टी संस्कृत)  
श्री कुलदीप सिंह (प्राथमिक शिक्षक)

### मुख्य पृष्ठ सजावट

श्रीमती प्रसून यादव (टी.जी.टी कला)  
श्री नवीन घुघरवाल (कंप्यूटर प्रशिक्षक)

### विद्यार्थी संपादक

कुमारी ऋतिका (ग्यारवी अ)  
आदित्य वर्मा (ग्यारवी अ)  
गरिमा (दसवी अ)



## Network security defined

Network security is a broad term that covers a multitude of technologies, devices and processes. In its simplest term, it is a set of rules and configurations designed to protect the integrity, confidentiality and accessibility of computer networks and data using both software and hardware technologies. Every organization, regardless of size, industry or infrastructure, requires a degree of network security solutions in place to protect it from the ever-growing landscape of cyber threats in the wild today.

### Principles of Security

Having discussed some of the attacks that have occurred in real life. let us now classify the principles related to security. This will help us understand the attacks better and also help us in thinking about the possible solutions to tackle them. We shall take an example to understand these concepts.

Let us assume that a person A wants to send a check worth 10000 rs to another person B. Normally, what are the factors that A and B will think of. in such a case, A will write the check for 10000rs. put it inside an envelope and send it to B.

A will like to ensure that no one except B gets the envelope and even if someone else gets it. she does not come to know about the details of the check. This is the principle of confidentiality.

A and B will further like to make sure that no one can tamper with the contents of the check (such in its amount. date. signature. name of the payee. etc, ).This is the principle of integrity.

B would like to be assured that the check has indeed come from A and not from someone else posing as A it could be a fake check in that case, This is the principle of authentication.

What will happen tomorrow if B deposits the check in her account, the money is transferred from A's account to B's account and then A refuses having written/sent the check, The court of law will use A's signature to disallow A to refute this claim and settle the dispute. This is the principle of non-repudiation.

These are the four chief principles of security. There are two more, access control and availability, which are not related to a particular message. but are linked to the overall system as a whole.

**S.K Mehra (Pgt comp science)**

**Naveen Ghugharwal (computer instructor)**





## A teacher's journey

Years back, when I was a student, I often thought, What is it that I can do change the world? To start with, I looked around for people who changed my world. There they were, my teachers. Their words had inspired me, their lessons had shaped me. I decided then, to be a teacher.

When I stepped into a classroom for the first time, as a teacher, I was nervous if I would ever be a good teacher. I was excited for I looked forward to being a good teacher. And, there they were, my students, as nervous and excited as me.

With every lesson, I taught I was a bit closer to knowing the world of my students. When faced with a difficult situation, I put myself in their shoes.

Thousands of students, I have taught. Often I struggled to teach each one, the best possible way. Then I realised a truth, every student, was different. Each student's mind worked a different way.

But, each mind, had a potential. If one was an artist, the other was to become a doctor. If one excelled in debates, the other was to become a dancer. And, as their teacher, I am proud of each one of them. For, I taught them lessons beyond books and the lessons of values. I have a dream to see my students excel, Every year, I nurture their beautiful minds. I admire their curiosity and ability to question. And, I see them bloom.

They have come to me with their problems, I have seen them take strides in life, As I teach another classroom of students, I am filled with hope. I know for sure, they are there to make me proud.

4 schools, 3 states, and 25 years later, I am as much a teacher as I am a learner. I teach lessons to them and they have taught me to hope. Thousands of students, one life at a time, Each teacher has shaped like me.

The history will remember the greatest of icons, But remember, behind every great icon, if there was a mother, there was a teacher too. My journey continues, till the time, I teach. And, till the time, my students remember their lessons and values.

- Poem by K. Bindu, a teacher from K.V.Khetri Nagar

## मेरा अंश मेरा ना रहा !!

मेरी प्रथम स्वरचित कविता  
(इस कविता में कलयुग की बेटियां और  
बेटों के लिए समर्पित)

जो आप बोओगे वही काटोगे  
मेरा अंश मेरा ना रहा !!  
ओस की बूंदे धूप आते हि उड़ जाएगी उड़  
जाएगी  
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया जिसे  
बड़े होते ही, मेरा हाथ छोड़कर चली  
जाएगी  
मेरा अंश मेरा ना रहा !!  
तूतला तूतला कर शोर मचाती  
मेरे बालों को सहलाती  
मैंने बोलना सिखाया जिसे  
अब मुझे चुप करवाती  
मेरा अंश, मेरा ना रहा !!  
जिसके लिए मैं घोडा बन जाता  
घुटनों के बल दौड़ लगाता  
आज मुझे सहारा देने में शर्माती  
मुझको गुस्से में आँख दिखाती  
मेरा अंश मेरा ना रहा !!



जिसको मेरा स्पर्श ताजगी देता था  
आज मेरा हाथ लग जाने से ,  
अपने पुरे शरीर को नहलाती  
मेरा अंश मेरा ना रहा !!  
वह जब चिल्लाती थी मैं उसे प्यारे  
समझाता  
शांति की नई परिभाषा बतलाता  
आज वह मेरी खांसी की आवाज पर  
चिल्लाती है  
मेरी नींद को जगाकर ,उसके सपनों को  
लोरी सुनाकर  
रखा था दिल के पास, आज उसने घर से  
बेघर कर दिया  
मेरा अंश मेरा न रहा  
मेरी अंतिम साँसे भी, तेरे लिये दुआ करती  
रहेगी  
तडपती हुई जान , निकलते हुए अरमान  
अगले जन्म में मुझे जानवर बना देना  
भगवान ||

विनोद कुमार मीणा  
स्नातकोत्तर शिक्षक( रसायन विज्ञान)



मेरा हिंदी प्रेम  
रचयिता : कुलदीप सिंह



अंग्रेजी की निति में,  
इतिहास की समिति में,  
विज्ञान की प्रकृति में,  
और गणित की त्रिकोणमिति में,  
उलझे हुए हम ये गलती पहली बार कर  
बैठे...

हम हिंदी से आँखें चार कर बैठे ।  
जी हाँ, हम हिंदी से प्यार कर बैठे ॥

(लेकिन जब हिंदी पढ़ने गए तो क्या देखा)

ऊँट के मुँह में जीरा था,  
कोयले की खान में हीरा था,  
दीए तले अंधेरा था,  
हर चेहरे पे नया चेहरा था,  
बड़ा मुश्किल था उन सब से पार पाना...  
खाया-पीया कुछ नहीं, गिलास तोड़ा बारह  
आना ।

(कुछ और आगे बढे)

अंधे का नाम नैनसुख हो गया,  
आँखों वाला घोड़े बेच के सो गया,  
ऊधर दुश्मन आँखें दिखा रहा था,  
और इधर दोस्त ईद का चाँद हो गया,  
हड्डी-पसली एक हो गई, तो आया मोड  
कहानी में...  
लो जी गई म्हारी भैंस पानी में ।

(थोडा और आगे बढे)

उल्टा चोर कोतवाल को डाँट रहा था,  
कोतवाल चोर के तलवे चाट रहा था,  
अंधेर नगरी को चौपट राजा पाट रहा था,  
और अक्ल का अंधा ज्ञान बाँट रहा था,  
दिमाग का दही हो गया था, चुभ उठी थी  
सुईयाँ...  
ये तो वही बात हो गई कि खोदा पहाड और  
निकली चुहिया ।

अंजाने ही सही अपनी हालत जार-जार कर  
बैठे,  
हम हिंदी से आँखें चार कर बैठे ।  
जी हाँ, हम हिंदी से प्यार कर बैठे ॥

(जय हिंद - जय हिंदी)

- कुलदीप सिंह  
प्राथमिक शिक्षक  
के.वि. खेतडीनगर

THE SWEET SMELL OF  
NEW MOWN MUD  
TITILATES TO PLAY WITH  
IT .

THE NEW COOL BREEZE  
BLOWS  
INFLAMES THE HEART TO  
TOUCH IT .

I WISH I WERE A RAIN  
DROP  
EVER FRESH , TANGIBLE  
AND TRANSITORY  
RISING AND DYING EVERY  
DAY .

ANJU  
PGT ENGLISH  
KV KHETRI NAGAR

## **FRIENDSHIP**

**FRIENDSHIP IS LIKE A GLASS**

**HANDLE IT WITH A CARE.**

**ONCE IT IS BROKEN**

**IT IS DIFFICULT TO REPAIR**

**MAKE NEW FRIENDS.**

**BUT DON'T FORGET THE OLD**

**ALWAYS REMEMBER**

**OLD IS GOLD.**

**FRIENDSHIP IS MORE**

**PRECIOUS THAN GOLD WHICH**

**IS NEVER TO BE SOLD.**

**ANURADHA**

**CLASS XI**



## जिंदगी

जब से परीक्षा वाली जिंदगी पूरी हुई है ,  
तब से जिंदगी की परीक्षा  
शुरू हो गयी है...

आज मुझे एक अनुभव हुआ  
अपने मोबाइल से अपना ही नंबर लगाकर देखा,

आवाज आयी THE NUMBER YOU HAVE  
CALLED IS BUSY

फिर ध्यान आया  
किसी ने क्या खूब कहा है

औरों से मिलने में दुनिया मस्त है पर,

खुद  
सारी लाइन व्यस्त है

कोई नहीं देगा तेरा साथ यहाँ  
हर कोई यहाँ खुद ही मे मशगुल है

जिंदगी का बस एक ही उसूल है यहाँ,  
तुझे गिरना भी खुद है  
और संभलना भी खुद है॥

c

## क्लास मॉनिटर

जो क्लास में बने मॉनिटर  
कोरी शान दिखाते है |  
आता जाता कुछ भी नहीं  
पर हम पर रॉब जमाते है |  
जब क्लास में टीचर नहीं है  
तो खुद टीचर बन जाते है |  
कॉपी पेंसिल लेकर ,  
बस नाम लिखने लग जाते है |  
खुद तो हमेशा बाते करें,  
हम चुप करवाते है |  
अपनी तो सब गलती माफ़  
हमे बलि चढाते है |  
क्लास तो संभाल पाते नहीं ,  
बस चीखते और चिल्लाते है |  
भगवान बचाये इस मॉनिटर से,  
इन्हें हम नहीं चाहते है |

नाम=सुहाना

कक्षा= नवी"अ"

## हिंदी का सम्मान

हिंदी ही गुरुमंत्र है,  
हिंदी ही अपनी शान,  
हिन्दुस्तानी की सदा,  
हिंदी ही पहचान |  
सरल बोलने में लगे,  
ध्वनि ज्यों कोकिल कूक,  
मनभावन और कर्ण प्रिय,  
बोले शब्द अचूक |  
करे प्रेम निज देश से,  
भाषा अपनी होय,  
हिंदी मन से बोलिए,  
समझ सके हर कोय |  
हिंदी के सम्मान में,  
छिपा देश का मान,  
सुन वाणी को जान ले,  
भारत देश महान |  
सदा रहे आजाद हम,  
पायें गौरव का ज्ञान,  
हिंदू है हिंदी पढे ,  
रखें आत्म सम्मान |  
हिंदी में उपलब्ध है,  
वेद, पुराण, कुरान,  
पढकर सब इनको बने ,  
देश, धारा की शान |

नाम = शुभम  
कक्षा = नवी "अ"

## उन्होंने कहा था

- अगर चिड़िया एकता कर ले तो, शेर की खाल खींच सकती है - शेखसादी
- एकांत हमें बताता है कि हमें कैसा होना चाहिये , समाज हमें बताता है कि हम क्या है—महात्मा गांधी
- उधार वह मेहमान है , जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता - प्रेमचंद
- कंजूस एक-एक पाई के लिए उतना ही उत्तेजित हो जाता है, जितना कि एक महत्वाकांशी पुरुष एक राजा की जीत के लिए - एडम स्मिथ
- कंजूस के पास जितना होता है उतना ही वह उसके लिए तरसता है, जो उसके पास नहीं होता है - साइरस

नाम= धर्मात्शु

कक्षा= नवी "अ"



## वीर भगत सिंह

### हँसते-हँसते फाँसी को गले लगाया

मोमबत्तियाँ बुझ गयी  
चिराग तले अँधेरा छाया था,  
फाँसी के फंदे पर जब  
तीनों वीरों को झुलाया था,  
सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु के  
मन को कुछ और न भाया था,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।  
तीनों के साथ आज  
एक बड़ा सा काफिला था,  
भारतवर्ष में लगा जैसे  
मेला कोई रंगीला था,  
लेकर जन्म इस पावन धरा पर  
उन्होंने अपना फर्ज निभाया था,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।  
मौत का उनको डर न था  
सीने में जोश जोशीला था,  
परवाह नहीं थी अपने प्राण की  
बसंती रंग का पहना चोला था,  
छोड़ मोह माया इस जग की  
अपनों को भी भुलाया था,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।  
इंकलाब का नारा लिए  
विदा लेने की ठानी थी,  
लटक गए फाँसी पर किन्तु  
मुख से उफफ तक न निकाली थी,  
देश-भक्ति को देख तुम्हारी  
सबने अश्रुधार बहायी थी,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।

तुम छोड़ गए इस दुनिया को  
दिखाकर आजादी का सपना  
सपना हुआ था सच लेकिन  
हमने खो दिया बहुत कुछ अपना,  
गोरों ने अपनी संस्कृति को  
हमारे सभ्याचार में बसाया था,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।  
टुकड़े-टुकड़े कर गोरों ने  
भारत माँ का सीना चीरा था,  
एकसूत्र करने का हम पर  
बहुत ही बड़ा बीड़ा था,  
हिन्दू मुस्लिम के झगड़ों ने  
इंसानियत के रिश्ते को भरमाया था,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।  
आज़ादी के बाद तो देखो  
कैसे यह लगी बीमारी थी,  
हिन्दू मुस्लिम के चक्कर में  
लड़ना सबकी लाचारी थी,  
कुछ को हिंदुस्तान मिला  
तो कुछ ने पाकिस्तान बनाया था,  
हँसते हँसते देश की खातिर  
फाँसी को गले लगाया था।

नाम = सुमित जाट

कक्षा = नवी "अ"

## अनमोल वचन

इन्सान मकान बदलता है,  
वस्त्र बदलता है, संबंध बदलता है,  
फिर भी दुखी रहता है क्योंकि,  
वह अपना स्वाभाव नहीं बदलता है।  
जो हो गया उसे सोचा नहीं करते,  
जो मिल गया उसे खोया नहीं करते,  
हासिल उन्हें होती है सफलता,  
जो वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।

चिंता करोगें तो भटक जाओगें,  
चिंतन करोगें तो भटके हुए को रास्ता  
दिखाओगेमंजिल मिल जायेगी, भटकते हुए ही  
सही,

गमराह तो वो है, जो घर से निकले ही नहीं।  
जिंदगी में सफलता पाने के लिए,  
थोड़ा जोखिम उठाना पड़ता है,  
सीढियाँ चढ़ते समय ऊपर जाने के लिए,  
चीजों को सीढ़ी से परे हटाना पड़ता है।

जिंदगी को आसन नहीं बस खुद को मजबूत  
बनाना पड़ता है,  
सही समय कभी नहीं आता बस समय को सही  
बनाना पड़ता है।

पानी में तस्वीर बना सकते हो तुम,  
कलम को शमशेर बना सकते हो तुम,  
कायर है जो तकदीर पे रोते है,  
जैसी चाहो वैसी तकदीर बना सकते हो तुम।

नाम = हेमंत कटारिया  
कक्षा = नवी "ब"

## देश का मान है हिंदी

देश का मान है हिंदी  
हम सब की पहचान है हिंदी  
प्रेम, हँसी, सहयोग और  
आदर्श का माध्यम है हिंदी  
देश का यश और गौरव है हिंदी  
हम सब का आत्मविश्वास है हिंदी  
देश का मान है ---  
हम सबकी ----  
इन्सान के दिलों की गरिमा है हिंदी  
गुरुओं की पहचान, संदेश है हिंदी  
धरती की खुशबू है हिंदी

देश का मान है -  
हम सबकी ---  
मन की रफ्तार है हिंदी  
देश के जवानोंका उद्घोष है हिंदी  
भगवान रूप का पहला शब्द है हिंदी

देश का मान है ---  
हम सबकी ----  
बड़े बुजुर्गों का आदर्श है हिंदी  
खुशियों का पैगाम है हिंदी  
संस्कारों को लेखा जोखा है हिंदी।

देश का मान है हिंदी  
हम सबकी पहचान है हिंदी।

नाम = आयुष बबेरवाल  
कक्षा = नवी "ब"



## बचपन

बचपन का जमाना होता था,  
खुशियों का खजाना होता था |  
चाहत चाँद को पाने की,  
दिल तितली सा दीवाना होता था |  
खबर न थी कुछ सुबह की,  
न शामों का ठिकाना होता था |  
थक हार के स्कूल से आना,  
फिर खेलने भी जाना होता था |  
दादी की कहानी होती थी,  
परियों का फ़साना होता था |  
बारिश में कागज की कश्ती थी,  
हर मौसम सुहाना होता था |  
हर खेल में साथी होते थे,  
हर रिश्ता निभाना होता था |  
पापा की वो डांट लगती पर,  
मम्मी का मनाना होता था |  
गम की जुबान न होती थी,  
न जख्मों का पैमाना होता था |  
रोने की वजह ना होती थी,  
ना हँसने का पैमाना होता था |  
अब नहीं रही वो जिंदगी,  
जैसा बचपन का ज़माना होता था |

## केंद्रीय विद्यालय

केंद्रीय विद्यालय है न्यारा स्कूल |  
सब बच्चों का प्यारा स्कूल |  
दूर-दूर से आते बच्चे |  
अच्छी शिक्षा पाते बच्चे |  
शिक्षक भी है, बड़े अच्छे |  
प्यार करते हैं, उनको बच्चे |  
तन-मन से वे ज्ञान लुटाते |  
मैं भी पढ़कर योग्य बनूँगी |  
यदि हर बच्चा पढ़ जाएगा |  
देश तरक्की कर जाएगा |

स्नेहा चौधरी  
कक्षा="ग्याहरवीं"

## मित्रता

पानी ने दूध से मित्रता की और उसमें समा गया..  
जब दूध ने पानी का समर्पण देखा तो उसने कहा-  
मित्र तुमने अपने स्वरूप का त्याग कर मेरे स्वरूप  
को धारण किया है....  
अब मैं भी मित्रता निभाऊंगा और तुम्हे अपने मोल  
बिकवाऊंगा।  
दूध बिकने के बाद  
जब उसे उबाला जाता है तब पानी कहता है..  
अब मेरी बारी है मैं मित्रता निभाऊंगा  
और तुमसे पहले मैं चला जाऊंगा..  
दूध से पहले पानी उड़ता जाता है  
जब दूध मित्र को अलग होते देखता है  
तो उफन कर गिरता है और आग को बुझाने लगता  
है,  
जब पानी की बूंदे उस पर छींट कर उसे अपने मित्र  
से मिलाया जाता है।  
तब वह फिर शांत हो जाता है।  
पर इस अगाध प्रेम में थोड़ी सी खटास ...  
(निम्बू की दो-चार बूँद)  
डाल दी जाए तो  
दूध और पानी अलग हो जाते हैं..  
थोड़ी सी मन की खटास अटूट प्रेम को भी मिटा  
सकती है।

रिश्ते में..  
खटास मत आने दो॥  
“क्या फर्क पड़ता है,  
हमारे पास कितने लाख,  
कितने करोड़,  
कितने घर,  
कितनी गाड़ियां हैं,  
खाना तो बस दो ही रोटी है।  
जीना तो बस एक ही ज़िन्दगी है।  
फर्क इस बात से पड़ता है,  
कितने पल हमने खुशी से बिताये,  
कितने लोग हमारी वजह से खुशी से जीए।

सभी को समर्पित

नाम = महफूज़ अहमद  
कक्षा = “ग्याहरवीं”



## पापा पर शायरी

मेरी हँसी में छिपे दर्द को भी पहचानते है,  
वो पापा है मेरे जो मुझसे बेहतर मुझे जानते है।  
कोई कुछ भी कहे  
ये बात पक्की होती है,  
पिता की डांट में भी  
बेटेकी तरक्की होती है।  
मेरी पहचान आप है पापा  
क्या कहूँ आप मेरे लिए क्या हो  
रहने को है पैरो के नीचे ये ज़मीन  
पर मेरे लिए तो मेरा आसमान आप हो  
माँ नो महीने पेट में रखती है  
जन्म के लिए  
पापा पूरी ज़िन्दगी दिमाग में रखता है  
उसके भविष्य के लिए।  
पूरी करते हर मेरी इच्छा  
उनके जैसा नहीं कोई अच्छा  
मुझे दुलारते मेरे पापा  
मेरे प्यारे प्यारे पापा।

## माँ पर शायरी

जिसको होने से में खुद को मुक़मल  
मानता हूँ,  
में खुदा से पहले मेरी माँ को मानता  
हूँ।

किसी भी मुश्किल का अब  
किसी को हल नहीं मिलता,  
शायद अब कोई माँ के पैर  
घर से छूकर नहीं निकलता।

माँ खुद भूखी होती है,  
मुझे खिलाती है,  
खुद दुखी होती है, मुझे चैन की नींद  
सुलाती है।

जो शिक्षा का ज्ञान दे,  
उसे शिक्षक कहते है,  
और जो खुशियों का वरदान दे, उसे  
माँ कहते है।

न तेरे हिस्से आयी,  
न मेरे हिस्से आयी,  
माँ जिसके जीवन में आयी, उसने  
जन्म पायी।

हर गली, हर शहर, हर देश -विदेश  
देखा,  
लेकिन माँ तेरा जैसा, प्यार कहीं नहीं  
देखा।

दुआ है रब से  
वो शाम कभी न आये  
जब माँ दूर मुझसे हो जाए।

नाम = साहिल शर्मा  
कक्षा = नवी "ब"

## मैं नहीं तुम , तुम नहीं मैं

मैं नहीं तुम, तुम नहीं मैं  
सदा ही करते तूतू मैं मैं ।

करो कभी कोई अच्छा काम ,  
बढाए जो भारत देश का नाम ।  
देश की धरोहर पर है सबका अधिकार  
फिर क्यों है इसकी सफाई से इंकार ।

नहीं कोई बहुत बडा उपकार ,  
बस करना है जीवन में बदलाव ।

शहर को मानकर घर अपना  
निर्मल स्वच्छ है उसे भी रखना  
कूडे दान में फेको कूडा  
इधर-उधर न फेको कूडा।

थूकने को नहीं है धरती मैया  
बदलो अपनी आदत भैया

मत करो किसी पडोसी का इंतज़ार  
देश है सबका बढाओ स्वच्छता अभियान ।

नाम = अमन शर्मा

कक्षा= नवी "ब"

## छत पर छिपकली उलटी दौड़ लेती है =ऐसा क्यों?

छिपकली के पंजो में बाल के समान लगभग 1 लाख 50  
हज़ार अत्यंत बारीक शल्क रचना खुद दो हज़ार हिस्सों  
में बाँटी होती है । ये इतनी बारीक होती है कि काँच के  
जैसी चिकनी सतह पर भी पकड़ बना लेती है । मतलब  
हम काँच को चिकना समझते है फिर भी छिपकली के  
लिए ये काँच खुरदरा होता है ,और छिपकली काँच जैसी  
सतह पर उन बारीक हुंकों से पकड़ बना कर चल लेती है  
।

नाम = हेमंत कटारिया

कक्षा=नवी "ब"



## कहानी: बकरी की (दोस्ती की परख)

एक बार की बात है, एक बकरी थी | वो बहुत खुशी- खुशी अपने गाँव में रहती थी | वो बहुत मिलनसार थी | बहुत सारी बकरियाँ उसकी सहेलियाँ थी | उसकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी | वो सभी से बात कर लेती थी और सभी को अपना दोस्त मान लेती थी |

सब कुछ अच्छा चल रहा था | लेकिन एक बार वो बकरी बीमार पड़ी और इस कारण वह धीरे-धीरे कमजोर होने लगी इसलिए अब वो पूरा-पूरा दिन घर पर ही बिताने लगी | बकरी ने जो खाना पहले से अपने लिए जमा करके रखा था , अब वो भी ख़त्म होता जा रहा था |

एक दिन उसकी कुछ बकरी सहेलियाँ उसका हाल-चाल पूछने उसके पास आई, तब ये बकरी बड़ी खुश हुई | इसने सोचा कि अपनी सहेलियों से कुछ और दिनों के लिए वह खाना मँगवा लेगी | लेकिन वे तो उससे मिलने के लिए अन्दर आने से पहले ही उसके घर के बाहर रुक गई और उसके आँगन में रखा उसका खाना और घास-फूस खाने लगी |

ये देखकर अब इस बकरी को बहुत बुरा लगा और समझ में आ गया कि उसने अपने जीवन में क्या गलती की? अब वो सोचने लगी कि काश! हर किसी को अपने जीवन का हिस्सा व दोस्त बनाने से पहले उसने उन्हें थोड़ा परख लिया होता, तो अब इस बीमारी में उसकी मदद के लिए कोई तो होता |

नाम - अभिजीत  
कक्षा- आठवी "अ"

## सुविचार

- मैं श्रेष्ठ हूँ यह आत्मविश्वास है लेकिन मैं ही श्रेष्ठ हूँ यह अहंकार है |
- जिस समय हम किसी का अपमान कर रहे होते हैं , उस समय हम अपना सम्मान खो रहे होते हैं |
- अगर कोई मनुष्य आपको केवल जरूरत पड़ने पर ही याद करता है तो उस बात का बुरा मत मानो, क्योंकि जब अँधेरा हो जाता है तभी दिए की याद आती है |
- लोग चाहते हैं कि आप बेहतर करें, लेकिन ये भी सत्य है कि वो कभी नहीं चाहते कि आप उनसे बेहतर करें |
- जब तक आप संघर्ष कर रहे होते हो, तब तक आपका साथ कोई दे या न दे,लेकिन जब आप कामयाब हो जाते हो, तो सब आपके साथ खड़े हो जाते हैं |

अंकिता कुमारी

कक्षा = छठी "अ"

## नर हो न निराश ,

नर हो न निराश ,  
नर हो, न निराश करो मन को  
कुछ काम करो, कुछ काम करो  
जग में रह कर कुछ नाम करो

यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो  
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो  
कुछ तो उपयुक्त करो तन को  
नर हो, न निराश करो मन को।

संभलो कि सुयोग न जाय चला  
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला  
समझो जग को न निरा सपना  
पथ आप प्रशस्त करो अपना  
अखिलेश्वर है अवलंबन को  
नर हो, न निराश करो मन को।

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ  
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ  
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो  
उठके अमरत्व विधान करो  
दवरूप रहो भव कानन को  
नर हो, न निराश करो मन को।

नाम =जिया राजोरिया  
कक्षा = छठी "अ"

## तितली रानी

तितली रानी !तितली रानी -  
कितनी प्यारी, कितनी सयानी  
रंग बिरंगे पंख सजीले!  
लाल,गुलाबी,नीले,पीले!

फूल!फूल पर जाती हो -  
क्याक्या गाने- गाती हो!

कलीकली - पर मंडराती हो!  
मीठा रस पीकर इठलाती हो!

अपने कोमल पंख दिखलाती!  
सबको उनसे है सहलाती!

इतनी सुन्दर तितली रानी!  
इस बगिया मे आना रानी!  
तितली रानी !तितली रानी -

नाम = कनिष्का  
कक्षा = छठी "अ"



## विद्यालय पत्रिका

आ गई है स्कूल कि पत्रिका  
छा गई है स्कूल की पत्रिका  
बच्चों के दिल में समा गई पत्रिका  
हर जगह वह तो छा गई पत्रिका  
मेरा फोटो आया  
स्कूल की मैगजीन में छाया है  
दिल में खुशियां लाया है  
दोस्तों को भाया है  
मेरे लेखन का सुधार होता  
जीवन का सुधार होता  
आ गई है स्कूल की पत्रिका  
छा गई है स्कूल की पत्रिका ।

स्कूल मैगजीन एक सार्वधिक पत्रिका होती है स्कूल के प्रबंधक इसे प्रकाशित करते है । अध्यापको की साहयता से विद्यार्थी इसका प्रबंध करते है । स्कूल मैगजीन में निबंध, कृतियाँ कहानियां तथा अन्य लेख होते है । इसे हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में विद्यार्थी लिखते हैं । कुछ लेख आदि अध्यापको द्वारा भी लिखे जाते है । मैगजीन के सभी लेख राजनीति से परे होते है ।

नाम कशिश  
कक्षा = छठी "अ"

## आजाद परिंदा

खुले गगन में जिंदा हूँ मैं,  
इक आजाद परिंदा हूँ मैं  
लंबी-लंबी अपनी राहें-  
उड़ूँ हवा में खोले बाँहें  
घूमूँ टहलूँ जाऊँ कहीं भी,  
उछलूँ नाचूँ, गाऊँ कहीं भी।  
किसी तरह का भी ना डर है,  
सारी दुनिया अपना घर है।  
कभी दूर तो कभी बगल में,  
कभी झोपड़ी कभी महल में।  
मंदिर, मस्जिद व गुरुद्वारे में-  
नदी, समंदर, झील किनारे।  
कभी लोटता रहूँ रेत में,  
कभी खेलता फिरूँ खेत में।  
बागबगीचों में मैं जाऊँ-,  
अपनी मर्जी के फल खाऊँ।

नाम = पायल  
कक्षा = छठी "अ"

## भ्रष्टाचार

एक दो, एक दो ,

भ्रष्टाचार को फेंक दो |

जब से आया ये दुनिया में भ्रष्टाचार

तब से लोग कर रहे हैं खूब दुराचार |

इसकी छाया बन रही है सर्वव्यापी

पर परमात्मा के प्रति ये है पापी |

है नेता भ्रष्टाचारी तो है दुनिया दुराचारी,

हे भगवान! पकड़ो बैया और पार करो नैया |

लोगो! भ्रष्टाचार को मारो ऐसे गोले

ताकि हर बच्चा सिर्फ यही बोले ;

कि....

एक दो, एक दो ,

भ्रष्टाचार को फेंक दो |

कवि हर्ष मेहता :

नाम = के वर्षा

कक्षा = छठी "अ"

## कुछ लाभदायक बातें

सदा डरो किससे ? ---- पापों से

चुप मत बैठो, कहाँ ? ---- धर्म प्रचार में

चलो चलो, कहाँ पर? ---- सत्संग में

गूंगे बहरे बनो कहाँ पर?--निंदा व निंदक में |

दूर, भगाओ, किसको ? ----- क्रोध को |

धिक्कार दो, किसको? ----- अहंकार को |

बहादुर बनो कब? ----- क्षमा धारण में |

देखकर मत हँसो, किसको? ----- दुखियों को |

आदर करो, किसका?--गुरुओं, महापुरुषों का |

भव्य कुमार  
आठवीं "अ"



## माँ की ममता

मेरे सर पर भी माँ की दुआओं का साया होगा,  
इसलिए समुन्दर ने मुझे डूबने से बचाया होगा |  
माँ की आघोष में लौटा आया है वो बेटा फिर से,  
शायद इस दुनिया ने उसे बहुत सताया होगा |  
अब उसकी मोहब्बत की कोई क्या मिसाल दे,  
पेट अपना काट बच्चो को खिलाया होगा |  
की थी सखावत उम्र भर जिसने उनके लिए,  
क्या हाल हुआ होगा जब हाथ में क़ज़ा आया होगा |  
कैसे जन्नत मिलेगी उस ओलाद को जिसने,  
उस माँ से पहले बीवी का फ़र्ज़ निभाया होगा |  
और माँ के सजदे को कोई शिर्क ना कह दे ,  
इसलिए उन पैरों में एक स्वर्ग बनाया होगा |

नाम =पियूष शर्मा  
कक्षा = आठवींअ

## पानी रे पानी

पानी रे पानी  
ये पानी बचाने की बात  
हमने बड़ों की क्यों नहीं मानी,  
की पानी उछालकर शैतानी  
और अब पड़ रही है  
बचपन की शैतानी की कीमत चूकानी |  
पानी रे पानी, पानी रे पानी |  
हमने बड़ों की बात क्यों नहीं मानी |  
वो क्या बचपन था , होली में जब पानी को  
यूँही उड़ाया करते थे, पानी को हाथ का  
पसीना समझा करते थे|  
और अब याद आ रही है हमें नानी और  
अब बस कह रहे है -  
यार हमने पानी बचाया होता ,  
तो आज वो 80 वर्ष  
के गरीब इन्सान को इतना लोगो ने पानी के  
लिए तड़पाया न होता|  
पानी रे पानी , पानी रे पानी |

नाम =पियूष शर्मा  
कक्षा = आठवींअ

## पेड़

पेड़ों की छाया में ही तो पंछियों का रैनबसेरा है  
इनके होने से हम हैं और कहते है जीवन मेरा है  
गौर से देखो जरा इन्हें ये भी तो कुछ कहते हैं  
फूल, फल, हवा सुगंध ये सब हमें देते रहते हैं  
मीठे-मीठे फल इनके बच्चों को कितना भाते है  
इनका ही रस तो लेकर भँवरे मस्त मगन हो जाते हैं  
पत्तियाँ, कभी ताज़ी हरी तो कभी सूखकर सुनहरी हो जाती  
हैं,  
इन्हें देखकर कोयल भी तो देखो नभ में कैसे गाती है  
देख इन्हें हर एक का दिल ऐसे खुश हो जाता है  
जैसे शीत लहर का झोंका खुशियों के रंग लाता है  
इनको गर जो काट गिराया ,कैसे मिलेगी तुमको छाया,  
दर्द इन्हें भी होता होगा ,चोट इन्हें भी लगती होगी  
इनको जो काट गिराओगे ,तुम भी तो न बच पाओगे |  
इनसे हम हैं हम से ये हैं इनसे ही हैं साँसे अपनी  
इनके बिना न जीवन अपना इनकी रक्षा काम है अपना,  
हर एक जो पेड़ लगाए गाँवों में नेक काम कर जायेगा |  
जो समझेगा दर्द को इनके इन्सान वही कहलायेगा |

नाम = भारती

कक्षा =सातवी "अ"

## कोशिश एक

कोशिश कर, हल निकलेगा।  
आज नही तो, कल निकलेगा।  
अर्जुन के तीर सा सध,  
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।।

मेहनत कर, पौधो को पानी दे,  
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।  
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,  
फौलाद का भी बल निकलेगा।

जिन्दा रख, दिल में उम्मीदों को,  
गरल के समन्दर से भी गंगाजल  
निकलेगा।कोशिशें जारी रख कुछ कर  
गुजरने की,जो है आज थमा थमा सा है,  
चल निकलेगा।।

नाम = आदित्य मीना

कक्षा =सातवी "अ"

## मैं बोझ नहीं हूँ

मैं बोझ नहीं हूँ  
शाम हो गई अब तो घूमने चलो न पापा  
चलते चलते थक गई कंधे पे बिठा लो न पापा  
अँधेरे से डर लगता है, सीने से लगा लो न पापा  
मम्मी तो सो गई  
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा  
स्कूल तो पूरी हो गई  
अब कॉलेज जाने दो न पापा  
पाल पोस कर बड़ा किया  
अब जुदा तो मत करो न पापा  
अब डोली में बिठा ही दिया तो  
आँसू तो मत बहाओ न पापा  
आपकी मुस्कुराहट अच्छी हैं  
एक बार मुस्कुराओ न पापा  
आप ने मेरी हर बात मानी  
एक बात और मान जाओ न पापा  
इस धरती पर बोझ नहीं मैं  
दुनियाँ को समझाओ न पापा.

नाम = अंशिका  
कक्षा = छठी "अ"

## महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता तुम कहलाते हो सभी प्यार से कहते बापू,  
तुमने हमको सही मार्ग दिखाया सत्य और अहिंसा  
का पाठ पढ़ाया,  
हम सब तेरी संतान है तुम हो हमारे प्यारे बापू।  
सीधा सादा वेश तुम्हारा नहीं कोई अभिमान,  
खादी की एक धोती पहने वाह रे बापू तेरी शान।  
एक लाठी के दम पर तुमने अंग्रेजों की जड़ें हिलायी,  
भारत माँ को आजाद कराया राखी देश की शान।

नाम = आदित्य मीना  
कक्षा = सातवी "अ"



## कविता

तू युद्ध कर  
माना हालात प्रतिकूल हैं,  
रास्तों पर बिछे शूल हैं  
रिश्तों पे जम गई धूल है  
पर तू खुद अपना अवरोध न बन

तू उठ..... खुद अपनी राह बना  
माना सूरज अँधेरे में खो गया है.....  
पर रात अभी हुई नहीं,  
यह तो प्रभात की बेला है।

तेरे संग है उम्मीदें,  
किसने कहा तू अकेला है  
तू खुद अपना विहान बन,  
तू खुद अपना विधान बन

सत्य की जीत हीं तेरा लक्ष्य हो  
अपने मन का धीरज, तू कभी न खो  
रण छोड़ने वाले होते हैं कायर  
तू तो परमवीर है,  
तू युद्ध कर, तू युद्ध कर

नाम= चेताली शर्मा  
कक्षा= सातवी "अ"

## किताबें

किताबें करती हैं बातें  
बीते जमानों की दुनिया की,  
इंसानों की आज की  
कल की एक-एक पल  
खुशियों की, गमों की  
फूलों की, बमों की  
जीत की, हार की  
प्यार की, मार की।  
क्या तुम नहीं सुनोगें,  
इन किताबों की बातें?  
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं  
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।  
किताबों में चिड़िया-चहचहाती है |  
किताबों में खेतियाँ लहलहाती है।  
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं |,  
परियों के किस्से सुनाते हैं।  
किताबों में साईस की आवाज़ है,  
किताबों का कितना बड़ा संसार है।  
किताबों में ज्ञान की भरमार है,  
किताबों का कितना बड़ा संसार है।  
क्या तुम इस संसार नहीं जाना चाहोगें?  
किताबें कुछ कहना चाहती हैं,  
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

नाम = चंचल  
कक्षा = सातवी "ब"

## हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ...

कभी डाँटती है हमें,  
तो कभी गले लगा लेती है माँ  
हमारी आँखों के आंसू,  
अपनी आँखों में समा लेती है माँ  
अपने होठों की हँसी,  
हम पर लुटा देती है माँ।

हमारी खुशियों में शामिल होकर,  
अपने गम भुला देती है माँ....  
जब भी कभी ठोकर लगे,  
तो हमें तुरंत याद आती है माँ.....  
दुनिया की तपिश में हमें,  
आँचल की शीतल छाया देती है माँ.....  
खुद चाहे कितनी थकी हो,  
हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ....

रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ  
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं  
ऐसी होती है माँ।  
लब्जों में जिसे बर्बाद नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ  
प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ।

नाम = शालू कुमारी  
कक्षा = आठवी "ब"

## काँटों में राह बनाते हैं।

सच है, विपत्ति जब आती है,  
कायर को ही दहलाती है,  
सूरमा नहीं विचलित होते,  
क्षण एक नहीं धीरज खोते,  
विघ्नों को गले लगाते हैं,  
काँटों में राह बनाते हैं।

मुँह से न कभी उफ़ कहते हैं,  
संकट का चरण न गहते हैं,  
जो आ पड़ता सब सहते हैं,  
शूलों का मूल नसाते हैं,  
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,  
टिक सके आदमी के मग में?  
खम ठोक ठेलता है जब नर  
पर्वत के जाते पांव उखड़,  
मानव जब जोर लगाता है,  
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर,  
हैं छिपे मानवों के भीतर,  
मेंहदी में जैसी लाली हो,  
वर्तिका बीच उज्याली हो,  
बत्ती जो नहीं जलाता है,  
रोशनी नहीं वह पाता है।

नाम = हितेन सैनी  
कक्षा = सातवी "अ"

## माँ को बेटी की पुकार

पहली धड़कन भी मेरी धड़की थी तेरे भीतर ही,  
जमीं को तेरी छोड़ कर बता फिर मैं जाऊं कहां  
आंखें खुली जब पहली दफा तेरा चेहरा ही दिखा,  
जिंदगी का हर लम्हा जीना तुझसे ही सीखा.

खामोशी मेरी जुबान को सुर भी तूने ही दिया,  
श्वेत पड़ी मेरी अभिलाषाओं को रंगों से तुमने भर दिया  
अपना निवाला छोड़कर मेरी खातिर तुमने भंडार भरे,  
मैं भले नाकामयाब रही फिर भी मेरे होने का तुमने अहंकार भरा.

वह रात छिपकर जब तू अकेले में रोया करती थी,  
दर्द होता था मुझे भी, सिसकियां मैंने भी सुनी थी  
नासमझ थी मैं इतनी खुद का भी मुझे इतना ध्यान नहीं था,  
तू ही बस वो एक थी, जिसको मेरी भूख प्यास का पता थ

पहले जब मैं बेतहाशा धूल में खेला करती थी,  
तेरी चूड़ियाँ तेरे पायल की आवाज से डर लगता था  
लगता था तू आएगी बहुत डाटेंगी और कान पकड़कर मुझे ले जाएगी,  
माँ आज भी मुझे किसी दिन धूल- धूल सा लगता है.  
चूड़ियों के बीच तेरी गुस्से भरी आवाज सुनने का मन करता है,  
मन करता है तू आ जाए बहुत डांटे और कान पकड़कर मुझे ले जाए,  
जाना चाहती हूं उस बचपन में फिर से जहां तेरी गोद में सोया करती थी,  
जब काम न हो कोई मेरे मन का तुम बात-बात पर रोया करती थी |  
जब तेरे बिना लोरियों कहानियों यह पलके सोया नहीं करती थी,  
माथे पर बिना तेरे स्पर्श के ये आंखें जगा नहीं करती थी.  
अब और नहीं घिसने देना चाहती तेरे ही मुलायम हाथों को,  
चाहती हूं पूरा करना तेरे सपनों में देखी हर बातों को.  
खुश होगी माँ एक दिन तू भी,  
जब लोग मुझे तेरी बेटी कहेंगे.

नाम = खुशी पाण्डेय

कक्षा = आठवी "ब"



## इंदिरा गाँधी

भारत की पहली और एकमात्र महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी थी, वे अपनी विद्वता, आकर्षक व प्रभावशाली व्यक्तित्व के बल पर देशवासियों के दिलों पर राज करती थी। उनका जन्म 19 नवम्बर 1917 को इलाहाबाद में हुआ था। उनकी माता श्रीमती कमला नेहरू और पिता का नाम श्री जवाहर लाल नेहरू था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। पूणे के एक स्कूल से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। आगे के विद्याध्ययन के लिए वे शिक्षा निकेतन चली गईं और गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के मार्गदर्शन में शिक्षा ग्रहण की। आगे की पढाई के लिए वो लन्दन चली गईं और ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ने लगीं। 1959 में वे अखिल भारतीय कांग्रेस की कमेटी में अध्यक्ष चुनी गईं। 24 जनवरी 1966 को भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं। वो एक दिन में 16 से 18 घंटे लगातार कार्य करतीं। संसद सत्र आरम्भ होने के बाद तो वो पूरी-पूरी रात ऑफिस में काम करती थीं। अमेरिका यात्रा में उनका भव्य स्वागत हुआ। इंदिरा गाँधी दूरदर्शी, कल्पनाशील और दृढ़ संकल्प वाली महान महिला थीं। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय मामलों पर गहन विचार-मंथन करने और समय के अनुसार उचित निर्णय पर पहुँचने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। 31 अक्टूबर 1984 को कार्यालय जाते समय उनके ही सुरक्षाकर्मी ने उनकी हत्या कर दी थी। पूरा राष्ट्र शोक में डूब गया। आज इंदिरा गाँधी जी हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु उनका चिंतन उनके विचार और उनके कार्य आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

धन्यवाद  
जय हिंदी जय भारत

नाम= हितांश यादव  
कक्षा= पांचवी अ

### तितली और कली

हरी डाल पर लगी हुई थी,  
नन्ही सुंदर एक कली।  
तितली उससे जाकर बोली,  
तुम लगती हो बड़ी भली।

अब जागो तुम आँखें खोलो,  
और हमारे संग खेलो  
फैले सुंदर महक तुम्हारी  
महके सारी गली- गली।

कली छिटककर खिली रंगीली,  
तुरंत खेल की सुनकर बात।  
स्वयं हवा के लगी भागने,  
तितली छूने उसे चली।

### मेरी माँ प्यारी माँ

माँ भगवान का रूप, माँ सर्दी की धूप  
माँ जगत की माया, माँ ही धूप में छाया  
माँ गंगा की धारा, माँ ही चाँद सितारा  
माँ फूलों पे सबनम, माँ बसंत का मौसम  
माँ पवन अहसास, माँ सम्यक विश्वास  
माँ सा देव न दूजा, माँ की करें हम पूजा।

नाम = हर्षिता  
कक्षा = पांचवी "ब"

## मोहनदास अलग था

महात्मा गाँधी से आज दुनिया भर में प्रसिद्ध मोहनदास का जन्म औसत से काफी ऊपर हैसियत वाले जिस गुजराती परिवार में हुआ था ,उसने इन्हें अच्छे संस्कार और गुण दिए | इससे इस सामान्य से बच्चे में इतना बड़े बनने की बुनियाद पड़ी | पिता करमचंद गाँधी एक रजवाड़े के दीवान थे | गाँधी जी को मोहनिया या मोनिया बुलाने वाली माँ पुतली बाई ने सिर्फ अच्छे संस्कार दिये|भोले मोहनदास को ऐसे माँ-बाप के व्यवहार पर भी कई बार सवाल उठाने का मन होता था और उन्होंने छुआछूत जैसे व्यवहार पर सवाल उठाये भी ,उन्हें अपने कामकाज पर भी शक होता था | और कई बार उन्होंने जो गलतियाँ कि उसका जिक्र उन्होंने खुद अपनी आत्मकथा में किया है और गलतियाँ सिर्फ उन्हीं की नहीं थी , कुछ ज़माने के चलन और समाज के रीति-रिवाजों की भी थी| जब वे अपने जन्मस्थल पोरबंदर के स्कूल में पढाई कर रहे थे तभी स्कूल इंस्पेक्टर निरीक्षण करने आए| उन्होंने कक्षा के विद्यार्थियों से अंग्रेजी के पाँच शब्द लिखवाये| इनमें से एक शब्द केटल ( kettle) था | गाँधी जी को केतली का हिज्जे नहीं मालूम था और उन्होंने गलत लिखा | इंस्पेक्टर साहेब की जांच से पहले मास्टर साहेब की नजर उनकी गलती पर पड़ी| उन्होंने इशारा किया और साथ वाले बच्चों की कॉपी से नकल कर लेने को कहा ,भोले मोहन को ये इशारा ही समझ नहीं आया क्योंकि उनके मन में बैठा था कि शिक्षक तो नकल रोकने के लिए होते है | अकेले उनकी कॉपी में ही गलती थी | बाद में शिक्षक ने बताया भी तो उनका मन कभी साथ के बच्चे से नकल करने पर नहीं गया |

ऐसे थे गाँधी जी

जय हिन्द जय भारत

नाम = देवोप्रिय मंडल

कक्षा = पांचवी "ब"

घुटनों से रेंगते रेंगते..  
कब पैरों पर खड़ी हुई,  
माँ तेरी ममता की छाओं में  
जाने कब बड़ी हुई!  
काला टीका दूध मलाई  
आज भी सब कुछ वैसा है,  
मैं ही मैं हूँ हर जगह  
माँ प्यार यह तेरा कैसा है?  
सीधी-साधी भोली भाली  
मैं ही सबसे अच्छी हूँ,  
कितना भी हो जाऊँ बड़ी  
माँ, मैं आज भी तेरी बच्ची हूँ!

नाम= भावना सैनी  
कक्षा= पांचवी ब

### चंदा मामा

चंदा मामा, आ जाना, साथ मुझे कल ले जाना।  
कल से मेरी छुट्टी है, ना आये तो कट्टी है।

चंदा मामा खाते लड्डू, आसमान की थाली में।  
लेकिन वो पीते हैं, पानी आकर मेरी प्याली में।

थपकी देकर जब अम्मा, मुझे सुलाती रात में।  
सो जाता चंदा मामा से, करता-करता बात मैं।

नाम = अंजली मीना  
कक्षा=पांचवी "ब"

बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।  
बेटा आन है, तो बेटी शान है।  
बेटा मान है, तो बेटी गुमान है।  
बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है।  
बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।  
बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है।  
बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।  
बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।  
बेटा राग है, तो बेटी बाग है।  
बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।  
बेटा प्रेम है, तो बेटी पूजा है।

नाम = डिंपल  
कक्षा= पांचवी "ब"

### माँ

तूने ही हमें जन्म दिया ,  
तूने ही जग देखने का दिया अवसर ।  
तू न होती तो मैं भी कुछ नहीं,  
तू जो न हो तो मैं भी कुछ नहीं ।  
तू जो करती बाहर से गुस्सा ,  
अंदर से करती उतनी ममता।  
तू जो है तो मैं हूँ इस जग में,  
तू न होती तो मैं क्या होती ।

नाम = मुस्कान  
कक्षा = पांचवी "ब"



## जीवन बीत चला

कल-कल करते आज,  
हाथ से निकले सारे।

भूत- भविष्य की चिंता में,  
वर्तमान की बाजी हारे ।

पहरा कोई काम न आया,  
रसघट रीत चला,  
जीवन बीत चला।

हानि लाभ के पलड़ों में,  
तुलता जीवन व्यापार हो गया।  
मोल लगा बिकने वाले का,  
बिना बिका बेकार हो गया ।

मुझे हाट में छोड़ अकेला,  
एक एक कर मीत चला,  
जीवन बीत चला।

नाम = मुस्कान

कक्षा = पांचवी "ब"

## गांधी जी की सीख

गाँधी जी के बंदर तीन ,  
सीख हमें देते है तीन।

बुरा दिखे तो मत दो ध्यान,  
बुरी बात पर मत दो कान।

कभी भी ना बोले कड़वे बोल,  
सीख हमें देते अनमोल ।

निरक्षरता को भगाना है ,  
ये कलंक देश का मिटाना है।

सत्य अहिन्सा पर चलते जाओ ,  
भारत माँ का मान |बढ़ाओं

नाम = हर्षिता

कक्षा= पांचवी "ब"

## प्रश्नोत्तरी

1. मकड़ी के पैरों की संख्या कितनी होती है ?
2. किस राज्य में चन्दन के सबसे ज्यादा पेड़ पाए जाते हैं ?
3. ओलंपिक खेल कितने सालों बाद आयोजित किये जाते हैं ?
4. जापान का राष्ट्रीय खेल कौन-सा है ?
5. फुटबॉल किस खेल का दूसरा नाम है ?
6. व्हाइट लोटस किस देश में पाया जाता है ?
7. सबसे चमकदार ग्रह कौन-सा है ?  
उत्तर = 1. 8 2. कर्नाटक 3. 4 सालों में 4. जुडो  
5 साँकर 6. चीन 7. शुक्र

## कविता-

वो यात्रा कि यात्री का सब भूल जाना,  
और डंडे से गिल्ली को दूर उडाना,  
वो होमवर्क से जी चुराना,  
और टीचर के पूछने पर बहाने बनाना।  
मुश्किल है उसको सबसे भुलाना,  
दुनिया का सबसे अच्छा समय,  
दुनिया का सबसे अच्छा दिन,  
दुनिया का सबसे हसीन पल,  
सिर्फ बचपन में ही मिलता है।  
इसलिए आप सभी को,  
बाल दिवस की बधाई।  
धन्यवाद

## मेरी माँ प्यारी माँ

माँ भगवान का रूप, माँ सर्दी की धूप।  
माँ जगत की माया, माँ ही धूप में छाया।  
माँ गंगा की धारा, माँ ही चाँद सितारा।  
माँ फूलों पे शबनम, माँ बसंत का मौसम।  
माँ पवन अहसास, माँ सम्यक विश्वास।  
माँ सा देव न दूजा, माँ की करें हम पूजा।

नाम = हर्षिता  
कक्षा = पांचवी ब

## बताओ तो जाने

1. सिर पर कलंगी  
पर में न चंदा  
गरजे बादल  
नाचे बंदा।
2. अरे गजब की है  
जरा सी ये बिटिया  
गज भर की है  
इसकी लम्बी चुटिया।
3. न कभी आता है  
न कभी जाता है  
इसके भरोसे जो रहे है  
वह हमेशा पछताता है।
4. घोड़ा यह है कैसा  
द्वार पर है खड़ा  
जिसने भी चाहा है पेट मरोड़ा।

उत्तर- 1 मोर 2 सुई धागा 3 कल 4 ताला

## माँ

प्यारी जग से न्यारी माँ,  
खुशियाँ देती सारी माँ,  
चलना हमें सिखाती माँ,  
मंजिल हमें दिखाती माँ,  
सबसे मीठा बोल है माँ,  
दुनिया में अनमोल है माँ,  
रोज दूध पिलाती माँ,  
लोरी गाके सुलाती माँ,  
स्कूल को ले जाती माँ,  
खाना मुझे खिलाती माँ,  
प्यारी जग से न्यारी माँ,  
खुशियाँ देती सारी माँ,  
मेरी प्यारी प्यारी माँ,  
मेरी प्यारी प्यारी माँ।

पापा जल्दी आ जाना  
पापा क्यों आते हो लेट  
करती रहती हु मैं बेट,  
पापा जल्दी आ जाना,  
मैं हूँ छोटी- सी बच्ची,  
मन की बिल्कुल ही सच्ची,  
पापा मुझे न फुसलाना,  
पापा जल्दी आ जाना।  
हँसना है ,कभी रोना है ,  
घर देखा है ,हर कोना है ,  
कुछ बाहर की दुनिया दिखलाना ,  
पापा जल्दी आ जाना।  
दादा-दादी संग रहती ,  
बिलकुल उन्हें न तंग करती,  
खेल खिलौने साथी है,  
रोना हँसना मेरा गान,,  
बाँस तुम्हारा अच्छा है ,  
करना काम जल्दी आना,  
पापा जल्दी आ जाना।

नाम = मुस्कान

कक्षा = पांचवी "ब"



## पहेलियाँ

1. काला घोडा सफ़ेद सवारी एक उतरे तो दुसरे की बारी।
2. हरी हरी मछली के हरे हरे अंडे।
3. ऐसी कौन सी चीज़ है जो फुल है फल है लेकिन वो मिठाई भी है ।
4. ऐसी कौन सी चीज़ है, जिसे हम खाते है लेकिन हमारा पेट नहीं भरता ।
5. ऐसा कौन सा गेट है जिसमें हम नहीं जा सकते है ।

1.तवा रोटी 2 मटर 3. गुलाब जामुन 4 कसम 5 कोलगेट

नाम = मुस्कान

कक्षा=पांचवी "ब"

## पहेलियाँ

1. हरी-हरी मछली के हरे-हरे अंडे बताओ कौन?
2. हरा-हरा चोर लाल मकान अन्दर बैठा काला शैतान बताओ कौन?
3. ऐसी चीज़ का नाम बताओ जो शहर और सब्जी दोनों है ?
4. तीन पैर की तितली नहा- धोकर निकली बताओ कौन ?
5. ऐसी कौन सी चीज़ है, जिसमे फल ओर फुल दोनों आते है?
6. काली बस सफ़ेद सवारी एक उतरे दुसरे की बारी बताओ कौन ?
7. ऐसा कौन सा गेट है, जिसमे घुस नहीं सकते?
8. ऐसा कौन- सा रस है, जिसे पी नहीं सकते है?
9. ऐसा कौन-सा रूम है, जिसमें जा नहीं सकते?
10. ऐसी चीज़ बताओ जिसे आगे से भगवान ने बनाया और पीछे से इन्सान ने बनाया?

उत्तर 1.मटर 2.तरबूज 3.शिमला मिर्च  
4.समोसा 5.गुलाबजामुन 6.तवा और रोटी  
7.कोलगेट 8.बनारस 9 मशरूम 10 बैलगाड़ी

नाम= नितिन गहलावत

## सूक्तियों

- (1) महीयांसः प्रकृत्यामित भषिणः ।  
अर्थ सज्जन लोग स्वभाव से ही मधुर भाषी होते हैं ।
- (2) कल्पवृक्षोअ कल्पवृक्षउप्य  
भव्यानां प्रयो याति पलाशताम् ।  
अर्थ भाग्यहीनों के लिए कल्पवृक्षभी ढाक का पेड़ बन जाता है ।
- (3) हितं मनोहारि च दर्लभ वचः ।  
अर्थ हितकारी और प्रिय लगने वाली बात अत्यन्त दुर्लभ है ।
- (4) सत्यं बूयात् प्रियं बूयात् न बूयात्  
सत्यमप्रियम् ।  
अर्थ प्रिय सत्य ही बोलना चाहिए,  
अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए ।
- (5) सहसा विदधीत न क्रियाम् ।  
अर्थ बिना सोचे समझे कोई कार्य नहीं करना चाहिए ।

— भव्य कुमार

—कक्षा—8अ

## संस्कृत श्लोक

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्यणि न  
मनोरथैः ।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे  
मृगाः ॥1॥

वाणी रसवती यस्य, श्रमवती क्रिया ।  
लम्पीः दानवती यस्य, सफलं तस्य  
जीवितं ॥2॥

प्रदोषे दीपकः चन्द्रः, प्रभाते दीपकः रवि  
।

त्रैलोक्ये दीपकः धर्मः सुपुत्रः कुलदीपकः  
॥3॥

प्रियवाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः  
।

तस्मात् सदैव वक्तव्यम् वचने का  
दरिद्रता ॥4॥

सेवित्व्यो महावृक्षः फलच्छाया समन्वितः  
।

यदि देवाद फलं नास्ति, छाया केन  
निवार्यते ॥5॥

छेवो रूष्टे गुरुस्त्राता गुरो रूष्टे न  
कश्चनः ।

गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः ॥6॥  
अनादरो विलम्बश्च वै मुरत्यम् निष्ठुर  
वचनम् ।

पश्चतपश्च पच्यापि दानस्य दूषणानि च  
॥7॥

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः  
।

चत्वारि तस्यवर्धन्ते आयुर्विद्या  
यशोबलं ॥8॥

दर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतो सन ।  
मणिना भूषितो सर्पः किमसौ न भयंकरः  
॥9॥

हृस्तस्य भूषणम् दानम्, सत्यं कंठस्य  
भूषणम् ।

श्रोतस्य भूषणं शास्त्रम्, भूषणैः किं  
प्रयोजनम् ॥10॥

पल्लवी चौहान

श्रीगुरुगोविन्दसह :गुरु : दशम (सिक्खाना) शिष्याणा :आसीत् तमे ईसवीये संवत्सरे 1666 तस्य जन्म। पाटलिपुत्रे नगरे अभवत् तस्य पितरौ नवमः गुरु श्री तेगबहादुरः गुजरी च आस्ताम् । सः बाल्यात् एवं निर्भिकः साहसिकःच आसीत् । सः न केवल स्वयमेव यावज्जीवन जन्मभूमेः स्वतन्त्रताया संघर्षम् अकरोत् प्राणप्रियान चतुरः स्वपुत्रान् अपि स्वतन्त्रतायाः जलिवेधा हुतवान् । यदा सः नववर्षीयः बालः आसीत् तदास्वपिन्तर धर्मस्य रक्षायै स्वजीवन समप्रियन्तु पैरयत् । फलतः गुरुः तेगबहादुरः इन्द्रप्रस्थ गत्वा आत्मोत्सर्गमकरोत् श्रीगुरुगोविन्दसहः 1699 तमे ईसवीय संवत्सरे आनन्दपुरनगरे बैसारविति दिवसे खालसापन्थस्य स्थापनाम् अकरोत् । तेन एका विशिष्टा सेनाडपि संघटिता । मुगलसम्राट औरन्गाजेबस्य सैनिकैः सह गुरोः सैन्यस्य अनेकानि युधदानि जातानि । स्वजीवनस्य अन्तिमसमये सः महाराष्ट्रप्रदेशस्य नान्देड ग्राममगच्छत्। तत्रैव 1708 तमे ईसवीयेसंवत्सरे सः प्राणान् अत्यजत् !

कविता :-द्वारिकाराधना

कसं परं मोजकुलावतंसं संसारपीडाप्रदमेव हत्वा ।  
स्वबन्धुवृन्दैर्मयुरां विहाय समागतोहत्र प्रभुकृष्णचन्द्रः ॥  
सौरा”ट्संशोभितसागस्य तीरेहपि नीरे स्मरणोयशोभा ।  
आभाति वेलावलयामिलग्ना सा द्वरिका सम्प्रति योगलग्ना ॥  
घरातले धामसु धन्यधन्या लवाण्यपुण्या नगरेष्वनन्या ।  
कान्ते । प्रशान्ते परिवेरामध्ये पुनः पुनः पश्य विमोः स्वरूपम् ॥

नाम – के. वर्षा

कक्षा-6 अ



## भारतीय संस्कृति

स्मस्तु भवान् निजगौरवं पुरस्तान् ।

कुलजा मनीषिणः ।

स्वतन्त्रभूतेऽपि भारते धुनास्माकं स्वत्वमात्मशक्तिश्च नोत्कर्षतः । परतन्त्रता गतः किन्तु तस्याश्छायास्मान् प्रगमन-पथे पदे पदे संवर्तयति । बहवो भारतीया अद्यापि वैदेशिक

वैदेशिकैरभिमुखीकृताचार-विचार-पन्जराद् बहिर्गन्तुकाना न सन्ति । अस्माद् वैदेशिक-

पन्जराद् बहिः सनातन । सत्यं शिवं सन्दरं विलसन्तीति दर्शयितुं मे पुस्तक-प्रणयनोत्साहः प्रभवति ।

मरीचिकाभ्रान्ता लोका विचारयन्ति यद् भारतीयसंस्कृतौ कश्चिदभावो वर्तते यस्मात् कारणाद् विदेशवासिनामिवास्माकं प्रगतिर्न भवति । तेषां संस्कृतेरात्मसात्करणे-नास्माकं

तैः समोऽभ्युदयः सम्भवि"यति । तेषा विभ्रमस्य निराकरणायैकमेवैतिहासिक-तथ्यमुद्धाटनमर्हति । यद् । ते वैदेशिका भारतमुपगतास्तदा देशोऽयं भारतीयसंस्कृति-प्रसादेनैव विश्वे प्रशस्यतमः समृद्धतमश्च बभूव । कालान्तरे तेषां वैदेशिकानां सुचिन्तितकपटयोजनाभिर्देशोऽयमात्मविस्मृत्युन्मादेन संस्कृतिदृष्ट्यापि परमुखापेक्षः कृत इति यथास्थानं दर्शितम् ।

स देशो जीवति यः प्राणपोनात्मसंस्कृतिं रक्षति । यदि नाम संस्कृतिर्विनष्टा तर्हि मद् राष्ट्रं निष्प्राणं भवति । उद्देश्यविहीनमुधुनातनं भारत । सांस्कृतिकवैषम्यमहार्णव-मनुकृत्युडुपेन तितीर्षतीति चिन्त्यम् ।

कस्येदं कर्म संस्कृति-रक्षणं नाम । यथा पुरा तथैवाधुनाति महात्मनां साधुसतां श्रमण-ब्राह्मणानां मनीषिणामाचार्याणां च सम्मिलितप्रयासेन सर्वोदयोन्मुखी प्राच्यसंस्कृतिः

शाश्वत । संरक्षिष्यते । तदर्थमेतेषामाचारविचारप्रचाराणामौदात्यं नितरामावश्यकम् । तत्रैकमेवाशाकेन्द्रम् । तत्तु भवतामनुविधेयं पदम्

विजानीहि संस्कृतिम् । श्रद्धास्पदं भूता सास्मान् विश्वगौरवपथे यथापूर्वं प्रणोष्यति । स्वसंस्कृति-सम्मान एव कस्यचित् पुरुषस्य च महिमान । प्रचिनोति ।

भारते संस्कृति-प्रचारस्य भाषा स्वभावतः संस्कृतिक-प्रकरणानि

सातिशय-सौकर्येण बोधयितुं प्रकाशयितुं च संस्कृतमेव क्षमम् । अन्यच्च संस्कृतभाषा थ्वविधप्रदोशिकभाषासु एकसूत्रतां स्थापयति । अथ च संस्कृति लब्धजनिः मम संस्कृति-

स्त्रोतस्विनी अन्या आधुनिक प्रान्तीयभाषास्तदर्थं सम्पोष्य तद्विषयकमभिनवसाहित्य-

## पुस्तकालय

यत्र विविधानी पुस्तकानि पठनार्थं  
संगृहीतानि भवन्ति तत् स्थानं (पुस्तकालयम्) इत्युच्यते ।  
तत्र हि त्रिविधः पुस्तकालयः व्यक्तिगतः  
विद्यालयीयः सार्वजनिकश्च । व्यक्तिगतः  
पुस्तकालयः अध्यापकानामन्येषां  
बुद्धिजीवीनां च कृते भवति ।  
विद्यालयीयः पुस्तकालयः विद्यालयस्य अंगः  
भवति छात्राणाम् अध्यापकानाञ्च  
ज्ञानवर्द्धनाय विद्यालयीयः पुस्तकालयः  
भवति । अत्र शैक्षणिकानि पुस्तकानि अपि संगृहीतानि भवन्ति ।  
निर्धनानां छात्राणां कृते विद्यालयीयः  
पुस्तकालयः अत्युपयोगी भवति ।  
सार्वजनिकेषु पुस्तकालयेषु बहुविधानि  
पुस्तकानि भवन्ति पुस्तकालय सम्पत्ति  
शनैः शनैः विद्यारूचिः जागर्ति ।  
सम्प्रति बीतशीलः पुस्तकालयः अपिप्राप्यते ।

दिपिका

कक्षा-6 अ

तीर्येषु धन्या नितरां सुपुण्या करालवन्याकुलकालकन्या ।  
सा द्वारिकामन्दिरमालमान्या विराजे विश्रविभागण्या ॥  
सनातनो वैदिकधर्म एव तस्य प्रचारार्थमिह प्रसिद्धाम् ।  
पुरीं समागत्य च शंकरः सः मठप्रतिष्ठां कृतवान् महात्मा ॥

### एषा मम धन्या माता

एषा मम धन्या माता ।  
एषा मम धन्या माता ॥ ध्रुवपदम।  
या मां प्रातः शय्यातः  
जागरयति सम्भोधनतः।  
हरसिमनण या कारयति।  
आलस्यन् मम नाशयति ॥ एषा मम ...।  
कुरु दंत ग्रहकार्यम् त्वम् ,  
कुरु सुत पाठभ्यासं |त्वम्|  
आदेश ददती एवम्  
योजयते कार्ये नित्यम् ॥एषा मम...  
कार्यं सम्यक् न करोमि यदा  
अपराधं विदधामि यदा।  
कलहुंकुवर्नं रोदिमि यदा  
तदा भ्रंशं मां तर्जयति या ॥एषा मम

नाम = चेताली  
कक्षा= सातवी "अ"



## यथाद्रिष्टः तथा सृष्टिः

एकदा गुरुः द्रोणाचार्यः दुर्योधनम् आहूय आदिशत्-

“वत्स! नगरे सर्वधिक गुणवन्तः जन्म अनिवष्य आनया”

दुर्योधनः अहंकारी आसीत् । सः सर्वत्र भ्रान्त्वा आगच्छत अवदत् च “भगवान् । मत्तःगुणवत्तर :

कोडपि नास्ति इति” आचार्ययुधिष्ठिरः पुनः आहूय आदिष्टवान् वत्स। संसारे सर्वाधिक गुणहिन जनम्

अनिष्य आनय इति” युधिष्ठिरः आगत्य अवदत्- “प्रभो। मत्तः गुणहिनः संसारे कोडपि नास्ति।

आचार्यः युधिष्ठिराय न वक्ष्यति। नूनं सत्यमेव उच्यते।

शिक्षा-यथा द्रिष्टः तथा सृष्टिः।

नाम = अभिजीत

कक्षा = आठवी “अ”

### संस्कृत में फूलों के नाम

चमेली	नवमल्लिका
गेंदा	स्थ लपद्मम्
गुलाब	पाटलम्
कनेर	कर्णिकार
चन्दन	श्रीखण्डम्
कमल	कोकनदम्
रातरानी	रजनीगंधा
नेवारी	नवमालिका
चम्पा	चम्पक
बेल	मल्लिका

### संस्कृत में समय ज्ञान॥

10:30	सार्धदशवादनम्
7:00	सप्तवादनम्
9:00	नववादनम्
3:15	सपाद त्रिवादनम्
6:45	पादोन षड्वादनम्

आदित्य मीना

कक्षा = सातवी “अ”

## IMPORTANCE OF LAUGHTER

Laugh is very Beneficial for our health.

The five most important Reasons to laugh are:-

1. Laughter Makes us healthier
2. Laughter touches our soul .
- 3 . Laughter keeps things in perspective.
4. Laughter helps us to stay positive.
5. Laughter is Loving

Laughter is a good thing. Scientists tell us that laughter, humor and joy are an important part of life. Laughing louse blood pressures, reduces stress hormones. It increases the circulation of antibodies and makes us more resistant to infarction. Laughter is good for us physically. Laughter is good for the soul. Laughter can be an important tool for keeping our troubles in proportion , for realizing that things aren't always as bad as her think they are laughter helps create positive emotions and helps create positive emotions and helps is find a frame of mind in which we can more easily cope with the struggles of life.

If we want to be happier ,healthier, and more productive we need to laugh.

**SNEHA**  
**CLASS XA**

## Amazing Truth

- letters 'a' 'b', 'c' & 'd' do not appear anywhere in the spellings of 1 to 99.
- Letter 'a' , 'b' & 'c' do not appear anywhere in the spelling of 1 to 999.
- Letter 'b' & 'c' do not appear anywhere in the spellings of 1 to 999,999,999,
- Letter 'c' does not appear anywhere in the spellings of entire English writing except after core

ANURADHA SAINI XI

---

## Mother

full of love, affection & warmth  
For me she is idol of mine .  
Always sacrificing, never complaining  
Peace or her face strength is her eyes .  
Makes us please to have in one life  
what I am today, because of you/  
You have made me fist like you.  
Always helping she is to me Alleviate me alone is the mid of the sea.  
Mother ,O mother you are so great to design. is bold and leave.  
Mother O mother you have to believe whatever I said is feeling of me.

SNEHA CHAUDHARY XI

---

## Did you Know.

Pineapple juice is 5 times more effective.  
Than cough syrup. It also prevents colds & the flu.  
Dogs have a total of 42 teeth  
when they are fully –grown.  
A snail can sleep for 3 years  
A single ant can live upto 29 years  
Zebras have only one toe on each foot .

ANURADHA SAI



## Why God Made Teachers

When God created teachers,  
He gave us special friends  
To help us understand His world  
And truly comprehend  
The beauty and the wonder  
Of everything we see,  
And become a better person  
With each discovery.

When God created teachers,  
He gave us special guides  
To show us ways in which to grow  
So we can all decide  
How to live and how to do  
What's right instead of wrong,  
To lead us so that we can lead  
And learn how to be strong.

When God created teachers,  
In His wisdom and His grace,  
Was to help us learn to make our  
world  
A better, wiser place.

**NAME= DEEPIKA SHEKHAWAT**

**CLASS= VI<sup>th</sup> A**

## Mother

Mother Mother Mother!!  
A Caretaker and a teacher  
Who taught me things  
Better! Better! Better!  
A Secret Keeper and  
A Friend who never betray,  
The special one who cares and  
Loves me unconditional!!  
You are a super woman  
You are the one who manages  
All the work on time .  
Which make you the super  
mother!!!

**Name= Priyanshi**

**Class= VI<sup>th</sup> A**

### Truly a friend

Someone to lean on when problems  
appear,  
Someone on whom you'd depend,  
Someone who'll lift you when you're down  
in the dumps,  
That someone is truly a friend.  
That's how I feel about you my dear friend;  
You're so special just as you are.  
Just to know that you're there provides  
comfort to spare;  
A friendship like yours sets the bar

NAME = SHRISTY BHARDWAJ

CLASS= VI A

### My Promise

Each day I'll do my best,  
And I won't do any less.  
My work will always please me,  
And I won't accept a mess.  
I'll colour very carefully,  
My writing will be neat.  
And I simply won't be happy  
'Until my papers are complete.  
I'll always do my homework,  
And I'll try on every test.  
And I won't forget my promise  
--  
To do my very best!

NAME= MONIKA

CLASS= VIII

### Interesting facts of humans

1. Human heart beat more than three billion time in average life span
2. The human nose can detect about 1 trillion smells.
3. As you breathe, most of the air is going in and out of one nostril
4. Your fingernails don't actually grow after you're dead.
5. The average person have 67 different species of bacteria
6. Humans have two kidney but only one is necessary to live.
7. Right handed people live more than left handed people

NAME= YUVRAJ JAAT  
CLASS = VII B

---

### BAD COMPANY

Once there was a rich man . He had a son. His name was Mohan,

Mohan was a good boy . He worked hard. He stood first in his class

Once he fell into a bad company. He became careless. He began to run away from the school. His father was very sad. He hit upon a plan. One day he bought many good apples from the market . he bought a bad apple also. He asked mohan to good apples and bad apples in the basket. The father called mohan the next day . he asked the mohan to bring the basket .All the apples had gone bad. Mohan was surprised .At this his father said, “ One bad apple has spoiled all the apples . So a bad company spoils a man.” Mohan learnt a lesson. He gave up his bad company. He became a good boy again.

Moral – Better alone than in a bad company.

NAME =ARYAN SAINI  
CLASS = VI<sup>th</sup> A

## COMPUTER

All may make use of it  
But take care of your eyes, please  
Play games or search something  
It has solution for everything  
It is not less than an encyclopedia  
For our ease we connect to Wikipedia  
Use any tool of it, it's the master  
It makes you the real blaster  
It has strong storage capacity  
And does not lack in versatility  
Use in a positive way  
Otherwise it will destroy your future's play  
Computer , computer it's called ,  
Because of it sometimes our parents scold  
It's an electronic device  
That need not revise  
All may make use of it  
But do take care of your eyes please.

**NAME = KAPIL KR.BALWADA**  
**CLASS= VI A**

## TREE

They didn't tell us  
What it would be like  
Without trees,  
Nobody imagined  
That the whispering of leaves  
Would grow silent  
Or the vibrant jade spring  
Pale to grey death  
And now we pile  
Rubbish on rubbish  
In this dusty landscape  
Struggling to create a tree  
But through the space is right  
And the nailed branches  
Learn upon the wind  
And plastic leaves  
Lend colour to the twigs  
We wait in vain  
For the slow unfurling buds  
And no amount of loving  
Can stir our weary tree  
To singing.

**NAME = KESHAV**  
**CLASS =VII A**



## To use the latest technology

To use the latest technology the right way, in the hands of the youth today. The present youth of this world is very familiar to technology. but do you think that they are using in a right way? they are many in this world who are using the technology for wrong things like hacking, stealing peoples private information, etc. Technology products like cell phones, electronic tablets, laptops, etc. can give a lot of information and help a person in different aspects of life. It can help people to connect to each other seated far across from each other but when used in a right manner. People always say its the duty of the parent to keep a constant check on what the child is doing on the internet, yes it is their duty. But its the duty of the child too to know where to draw a line, and if by chance if they do make a mistake to come and inform their parents so that the problem can be resolved right then without it causing any more harm. It is the duty of every human living in this world and is fortunate enough to access internet and different technological gadgets to spread the news to people and make our society safe and happy but making them understand the importance of internet as well as to guide them not to use it in wrong ways. And its our duty to understand where to draw the line because someone can explain and guide us but that task can be accomplished only if you execute it

**NAME = RAKSHIKA**

**CLASS= VII B**

## Your Best

If you always try your best  
Then you'll never have to wonder  
About what you could have done  
If you'd summoned all your thunder.  
And if your best  
Was not as good  
As you hoped it would be,  
You still could say,  
"I gave today  
All that I had in me."

NAME= PALAK VERMA

CLASS = VIII B

## MANNERS

We say, "Thank you."  
We say, "Please."  
We don't interrupt or tease.  
We don't argue. We don't fuss.  
We listen when folks talk to us.  
We share our toys and take our  
turn.  
Good manners aren't too hard  
to learn. It's  
really easy, when you find.  
Good manners means  
JUST BEING KIND!

NAME = REHAN AHMED KHAN

CLASS = VIII B

## Teachers

Teachers  
Paint their minds  
Share their achievements  
And Advise Their Faults  
  
Inspire a Love  
Of Knowledge And Truth  
As you light the path  
Which leads our youth  
  
For our future brightens  
With Each Lesson You Teach  
Each smile you lengthen  
Each goal you help reach  
  
For the dawn of each poet  
Each Philosopher And King  
Begins with a Teacher  
And the wisdom they bring.

**NAME = CHETALI**  
**CLASS = VII A**

## Amazing facts about india

1. Around a 100 million years ago, India was an island
2. India name is derived from the "Indus river"
3. Indus valley civilization is the world's oldest civilization
4. India has the world's third largest active army after china and usa
5. India has the largest English speaking population in the world
6. Until 1986, the only place where diamonds had been officially found was in india
7. India has banned all captive dolphins , stating that dolphins should be viewed of non- human persons
8. Varanasi is the oldest , continuously inhabited city in the world today
9. India hence is the world's oldest , most advance and continuous civilization
10. India's first rocket was brought on cycle and a satellite on bullock cart.

**NAME = HARSH RAJ**  
**CLASS = VII A**

### **Hold My Hands, Mummy**

Hold my hand, mummy  
And show me the way  
So that I can go out  
In the big world one day.  
Teach me the basics  
And then let me learn.  
Should I ever get stuck  
I will know here to turn.  
Cheer me up, mummy  
When I'm feeling not very well.  
I can always help  
When you are unwell.  
Dry my tears, Mummy  
When I'm feeling sad.  
Let me know it's okay  
And I won't feel .  
Show me the sunshine  
And then set me free  
To be the brilliant person  
That you raised me to be.

**Chandana Ghosal (Class 5 A)**

### **Why not a girl, Why not a girl !!**

Why not a girl , Why not again  
people pray for a boy, not for a girl,  
but .....  
when in need of education  
people go to goddess saraswati,  
When in need of money,  
People go to goddess Laxmi.  
when in need of courage  
people go to goddess Durga.  
So, why don't they want a girl ?  
In a family? Why not?

**Maanvendra Singh(Class 5 )**

### **The Chameleon**

Chameleons are seldom seen,  
They're red  
They're orange  
Then they're green  
They're one of nature's strangest  
sights  
Their colors are like traffic lights.

**Disha (Class 4 A)**

### **Thanks Mom, Thanks Dad**

Thank you, Mom.  
Thank you, Dad.  
Three small words.  
So much to add.  
For all your love  
And your support  
A million words  
Would be too short.  
The words, "I love you"  
Seem too few  
To express the love  
I have for you.

**Harshita ( class 5 B)**



KENDRIYA VIDYALAYA, KHETRI NAGAR , JHUNJHUNU(RAJ)  
STAFF MEMBERS



**SITTING LEFT TO RIGHT:**

Mrs K.Bindu(prt), Mr Kailash Chand(prt), Mr Prahlad Singh(Principal),Mr Ravi Kumar (Pgt Maths),Mr Ghyanshyam Kuldeep(Pgt bio)

**STANDING LEFT TO RIGHT:**

Mr Sunil Kumar(tgt eng), Mr Mehboob Ahmad(tgt lib), Mr Jawahar( lab att)  
Mr Nandlal Saini(ssa), Mr. Rajendra Prasad Verma(tgt), Mr Jitesh Saini(tgt),  
Mrs Neelam Bai(pgt hindi), Mrs Yogeeta(prt), Mrs Prashun Yadav(tgt), Mrs Aarti(prt),  
Mrs Anju(pgt eng), Mrs Lalita(prt),Mr Nagesh Dhankar(tgt),Mrs Sunita(Nurse),  
Mr Patram(prt), Mr Omprakash (sub staff), Mr Digvijay Singh(prt),Mr Manoj Kumar (tgt),Mr Sunder Lal(prt), Mr Jaman Lal(Lab attendant),Mr Naresh Kumar(tgt)  
Mr S.K Mehra(pgt comp sci.), Mr T.Soni(tgt), Mr Vinod Meena(pgt chem)  
Mr Naveen Ghugharwal(comp inst), Mr Yogesh (pgt phys), Mr N.S Rathore(tgt sci)  
Mr Inder Lata(tgt maths), Mr Amit kumar(P.E.T), Mr Sandeep(Jsa),  
Mr Kuldeep Singh(prt), Mrs Dolly Bharti(prt music ),Mr Rajaendra(sub-staff)  
Mrs Ketki( prt), Mr Vipin ( prt), Mr Rakesh Kumar( Sport coach),  
Mr Prem Prakash (Yoga )